फैक्ट शीट

आई.ई.सी.ई.आई. (इंडिया अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन) के प्रभाव का अध्ययन

आई.ई.सी.ई.आई. अध्ययन भारत में शाला–पूर्व सुविधाओं में बच्चों की भागीदारी की प्रकृति का और उनकी स्कूल की तैयारी तथा प्राथमिक कक्षाओं में उनकी उपलब्धि पर इस भागीदारी के प्रभाव का बड़े पैमाने पर किया गया गहन परीक्षण है। तीन बड़े राज्यों (असम, राजस्थान और तेलंगाना) में किए गए इस दीर्घकालीन अध्ययन में, लगभग 14,000 बच्चों का, उनके चार साल की उम्र से आठ साल के होने तक लगातार चार वर्षों तक अध्ययन किया गया। इस तथ्यात्मक दस्तावेज (फैक्ट शीट) में राजस्थान के संबंध में आई.ई.सी.ई.आई. अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों का सार प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन के जिले और नमूना

राजस्थान में यह अध्ययन अलवर और अजमेर जिलों में किया गया था, जहां अध्ययन की बड़ी सर्वेक्षण–आधारित श्रृंखला के लिए अव्यवस्थित/रैंडम ढंग से 103 गांवों को नमूने के रूप में चुना गया था। अध्ययन के अर्द्ध–प्रायोगिक कड़ी के एक हिस्से के रूप में 22 गांव सम्मिलित किए गए थे।

चयनित गांवों में से सर्वेक्षण आधारित श्रृंखला के लिए 4,544 तथा अर्द्ध–प्रायोगिक कड़ी के लिए 857 चार वर्षीय बच्चों का आई.सी.डी.एस. के सर्वेक्षण अभिलेखों के आधार पर अव्यवस्थित/रैंडम तरीके से चयन किया गया।

क्या बच्चों के लिए शाला–पूर्व सुविधाएं उपलब्ध हैं?

राजस्थान में शाला–पूर्व शिक्षा की समुचित सुविधाएं उपलब्ध हैं।

- इस अध्ययन के बेसलाइन क्षेत्रीय दौरे के समय नमूने के 120 गांवों में कुल मिलाकर 627 पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र सूचीबद्ध किए गए थे।
- कुल मिलाकर देखा गया कि नमूने के 10 में से 8 से अधिक गांवों में शाला–पूर्व शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध थीं। प्रत्येक गांव में कम से कम एक सरकारी आंगनवाड़ी केन्द्र (ए.डब्ल्यू.सी.) उपलब्ध था और 90% से अधिक गांवों में कम से कम एक निजी पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की सुविधा उपलब्ध थी।

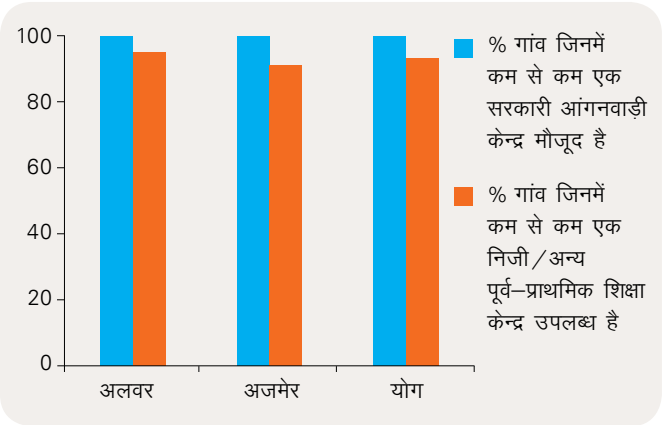

4 वर्ष की उम्र में बच्चे कहां हैं?

राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखरेख एवं शिक्षा नीति (2013) के अनुसार 4 वर्ष की उम्र के बच्चों को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों में दाखिल कराया जाना चाहिए और उन्हें केवल 6 वर्ष की उम्र में ही पहली कक्षा में दाखिल होना चाहिए। लेकिन राजस्थान नमूने में शामिल आधे से थोड़े अधिक बच्चे ही पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों में दाखिल थे।

- नमूने में शामिल सभी बच्चों में से एक–तिहाई बच्चे किसी भी तरह की शैक्षिक सुविधा में भाग नहीं ले रहे थे। इनकी संख्या अजमेर में अधिक और अलवर में कम थी।
- 4 वर्ष की उम्र के बच्चों में से काफी बच्चे पहले से ही प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे: अजमेर में 10 में से लगभग 1 और अलवर में 10 में से लगभग 2 बच्चे प्राथमिक स्कूल में नामांकित थे।

ऐसे पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों और विद्यालयों की श्रेणियां जहां 4 वर्ष की उम्र के बच्चे पढ़ रहे हैं

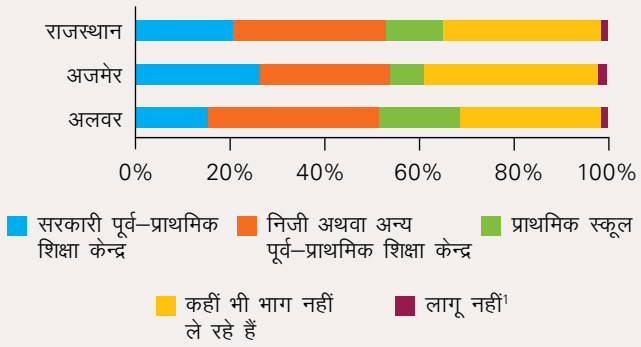

बच्चों की भागीदारी वाले पूर्व–प्राथमिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता

इस अध्ययन की अर्द्ध–प्रायोगिक श्रृंखला में चयनित नमूने के बच्चे जिन शाला–पूर्व कार्यक्रमों में भाग ले रहे थे, उन कार्यक्रमों की गुणवत्ता का आकलन कुछ विशिष्ट आयामों के आधार पर किया गया। 'प्रारंभिक बाल्यावस्था शैक्षिक गुणवत्ता आकलन पैमाना' नामक अवलोकन–आधारित निर्धारण पैमाने का प्रयोग करते हुए दो जिलों (अजमेर में 27 और अलवर में 25) में कुल मिलाकर 52 शाला–पूर्व कार्यक्रमों का जायजा लिया गया। तीन अलग–अलग मॉडलों का अवलोकन किया गया – आंगनवाड़ी केन्द्र, निजी पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र और ज्ञात अभ्यास केन्द्र। अपने नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए विख्यात एनजीओ द्वारा वंचित बच्चों के लिए चलाये जा रहे सामुदायिक प्राथमिक स्कूलों के साथ जुड़े शाला–पूर्व सेक्शनों को ज्ञात अभ्यास केन्द्रों के रूप में नमूने में शामिल किया गया। तथापि, ज्ञात अभ्यास केन्द्र केवल अलवर में ही उपलब्ध थे। तीनों मॉडलों की तुलनात्मक रूपरेखा नीचे प्रस्तुत की गई है:

आंगनवाड़ी केन्द्र (संख्या 10)	निजी पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र (संख्या 33)	ज्ञात अभ्यास केन्द्र (संख्या 9)
कक्षाओं में सीमित बुनियादी सुविधाएं और सीखने की सहायक सामग्री	कक्षाओं में बुनियादी सुविधाएं और सीखने की सीमित सहायक सामग्री	बच्चों के लिए बेहतर बुनियादी सुविधाएं तथा क्रियाकलाप पुस्तकों की उपलब्धता
2–6 वर्ष की उम्र के बच्चों का मिश्रित/विविधता लिए हुए समूह जिनमें छोटे बच्चों की संख्या अधिक है	असमान आयु वर्ग	बच्चों का मिश्रित/विविधता लिए हुए समूह जिन्हें क्रियाकलापों के अनुसार छोटे–छोटे समूहों में बांट दिया जाता है
बेहतर छात्र–अध्यापक अनुपात	उच्चतर छात्र–अध्यापक अनुपात	अधिकतर केन्द्रों में बेहतर छात्र–अध्यापक अनुपात
किसी समय–सारणी का पालन नहीं किया जाता	विषय–वार समय–तालिका का पालन किया जाता है	लचीली साप्ताहिक और मासिक पाठ्यचर्या योजनाएं
सीमित नियोजित क्रियाकलाप – अधिकांश समय दैनिक/रोजमर्रा के क्रियाकलापों पर खर्च	मुख्यतः रटने पर आधारित औपचारिक शिक्षा तथा कुछेक आयु–विशिष्ट क्रियाकलाप	औपचारिक शिक्षा के बिना आयु और विकासात्मक दृष्टि से अनुकूल क्रियाकलाप
आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को न्यूनतम ऑन जॉब प्रशिक्षण	अध्यापक पूर्व–प्राथमिक शिक्षा में प्रशिक्षित नहीं	प्रशिक्षित अध्यापक, सेवाकालीन और लगातार प्रशिक्षण तथा सहयोगात्मक देखरेख की व्यवस्था

[1] फील्ड वर्क के पहले दौर में बच्चों के एक छोटे अनुपात के लिए संस्थानों के प्रकारों की जानकारी नहीं जुटाई जा सकी थी। ऐसे संस्थानों को इस दौर में 'लागू नहीं' में वर्गीकृत किया गया है।

शाला–पूर्व शिक्षा कार्यक्रम के दो मॉडल – आंगनवाड़ी केन्द्र और निजी पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र, जिनमें राजस्थान के अधिकतर बच्चे भाग ले रहे थे, उन कार्यक्रमों में रोजमर्रा के कामकाज में लगाये गए समय का विश्लेषण करने से यह पता चलता है कि कुल मिलाकर ये कार्यक्रम आयु और विकास की दृष्टि से उपयुक्त नहीं थे। अधिकांश बच्चे निजी पूर्व–प्राथमिक केन्द्र में भाग ले रहे थे और यह देखा गया कि उनके अनुभव अधिकतर औपचारिक पठन और लेखन तक सीमित थे, जो कि प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम का अधोमुखी विस्तार होता है। आंगनवाड़ी केन्द्रों और निजी पूर्व–प्राथमिक कार्यक्रमों में बच्चे काफी लंबे समय तक किसी योजनाबद्ध क्रियाकलाप में शामिल नहीं थे, साथ ही संज्ञानात्मक, भाषागत और सामाजिक विकास के लिए खेलकूद–आधारित क्रियाकलापों पर बहुत कम समय दिया गया तथा यह भी केवल आंगनवाड़ी केन्द्रों में पाया गया। एनजीओ द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम, जो केवल कुछेक गांवों के बच्चों के लिए उपलब्ध थे, अवसरों/एक्सपोजर की गुणवत्ता की दृष्टि से इसलिए बेहतर थे क्योंकि इन केन्द्रों में संज्ञानात्मक और भाषा विकास को बढ़ावा देने के लिए विकासात्मक दृष्टि से कुछ अनुकूल गतिविधियां देखी गई थीं।

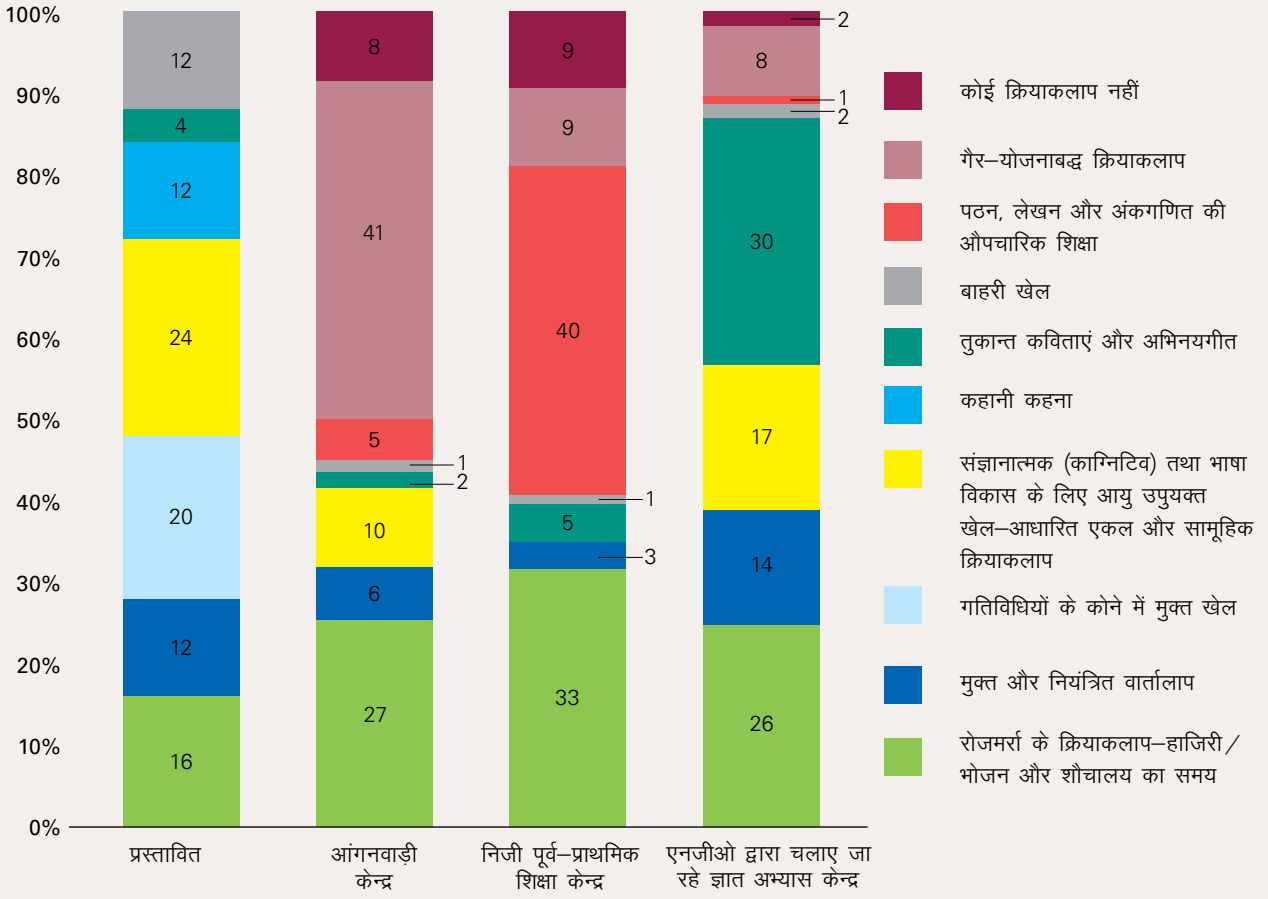

बच्चे कब प्राथमिक विद्यालय में दाखिल होते हैं?

दोनों जिलों में जिस उम्र में बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेते हैं, उसमें काफी अंतर है। यह केवल 8 साल की आयु में होता है जब दोनों जिलों के 90 प्रतिशत से अधिक बच्चे प्राथमिक स्कूलों में दाखिल होते हैं।

- अलवर जिले में 5 वर्ष की उम्र में 10 में से लगभग 6 बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ रहे थे, जबकि अजमेर में ऐसे बच्चों की संख्या प्रत्येक मात्र 3 थी।

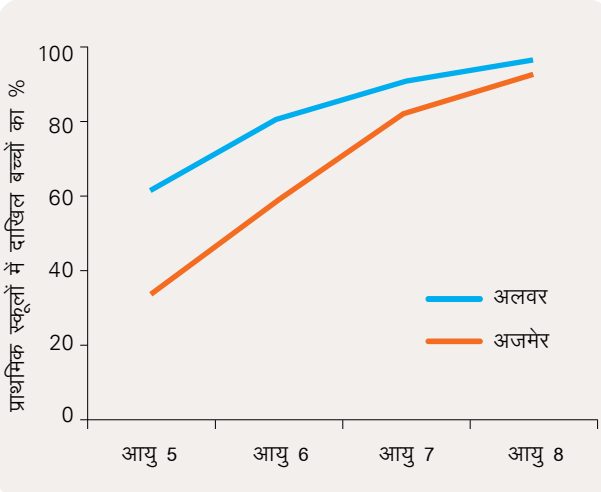

- निजी संस्थानों में पढ़ने वाले बच्चों का अनुपात अजमेर की तुलना में अलवर में अधिक था। उदाहरण के लिए अलवर में 5 वर्ष की उम्र में प्रत्येक 10 बच्चों में से 6 बच्चे निजी संस्थानों में दाखिल थे, जबकि अजमेर में यह संख्या 5 थी।

इस आंकड़े के समग्र रुझान यद्यपि यह तथ्य कहीं ढंक लेते हैं कि बच्चों का एक बड़ा अनुपात प्राथमिक स्कूलों में स्थिर भागीदारी का सीधा–सीधा रास्ता नहीं अपनाता है, और इसमें पूर्व–प्राथमिक व प्राथमिक स्कूलों के बीच अदला–बदली शामिल होती है। कहने का मतलब यह है कि बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे देखे गए जो पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र से प्राथमिक विद्यालय में आ गए, पुनः पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में चले गए और दोबारा से प्राथमिक विद्यालय में आ गए। अध्ययन में शामिल तीनों राज्यों के उन जिलों में इस तरह की अदला–बदली अधिक देखी गयी, जहां निजी स्कूलों में बच्चों की भागीदारी अधिक थी। अलवर में 5 वर्ष की उम्र के प्रत्येक 10 बच्चों में से ऐसे लगभग 2 बच्चे पाए गए जिन्होंने पिछले एक वर्ष में कम से कम एक बार इस तरह की गैर–रेखाबद्ध अदला–बदली अनुभव की थी, जबकि अजमेर में प्रत्येक 10 बच्चों के पीछे ऐसे बच्चों की संख्या 1 थी।

4 और 5 वर्ष के बीच की आयु में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केन्द्र में भाग लेने से क्या बच्चों के स्कूल की तैयारी और उनके प्रारंभिक कक्षा में सीखने के स्तर में सुधार आता है?

आई.ई.सी.ई.आई. अध्ययन के एक हिस्से के रूप में स्कूल की तैयारी को लेकर बच्चों की 4 और 5 वर्ष की उम्र में तथा प्रारंभिक कक्षा में सीखने की दृष्टि से 6, 7 तथा 8 वर्ष की उम्र में जांच की गई।

यह अध्ययन बताता है कि 4 से 5 साल की उम्र में शाला–पूर्व कार्यक्रम में नियमित भागीदारी 5 वर्ष की उम्र में बच्चों की स्कूल की तैयारी पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, और शाला–पूर्व शिक्षा की गुणवत्ता स्कूल की तैयारी के स्तर को बेहतर बनाने वाले एक महत्वपूर्ण कारक के तौर पर उभरती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि 5+ की आयु में जिन बच्चों के स्कूल की तैयारी का स्तर ऊंचा था, वे बाद के आकलन के हर स्तर पर निम्नतर स्कूल की तैयारी वाले अपने साथियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते देखे गए। यद्यपि कुल मिलाकर राजस्थान में 5 वर्ष की उम्र में बच्चों की स्कूल के लिए तैयारी अपेक्षित स्तरों से कम थी तथा अध्ययन के सभी तीन राज्यों में सबसे कम थी।

स्कूल की तैयारी और प्रारंभिक कक्षा में सीखने के बीच संबंध

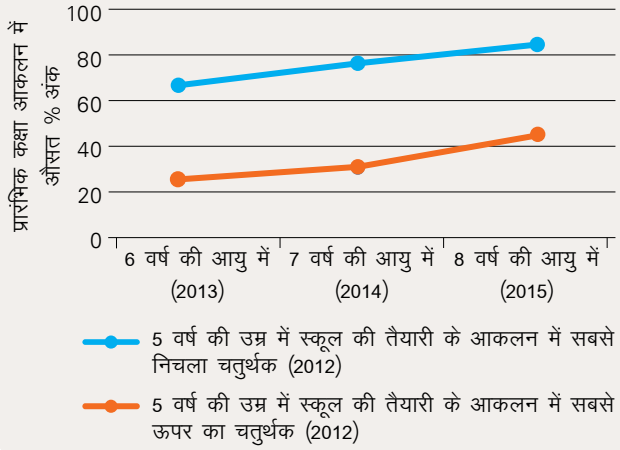

इन आंकड़ों से यह पता चलता है कि उच्च स्तरीय तथा आयु–उपयुक्त शाला–पूर्व शिक्षा में निवेश करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि यह कम सुविधासंपन्न बच्चों को अपने अधिक सुविधासंपन्न सहपाठियों के समान लाने का एक महत्वपूर्ण तंत्र है।

शाला–पूर्व सहभागिता के अतिरिक्त बालक–बालिका होना, परिवार की संपन्नता और माता की शिक्षा ऐसे महत्वपूर्ण तत्वों के रूप में उभरे जो राजस्थान में 4 और 5 वर्ष की उम्र के बीच के बच्चों के स्कूल की तैयारी के स्तर को प्रभावित करते हैं।